अध्याय 5

भारत : एक सुरक्षित आश्रय-स्थल

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

"यह मेरा है, वह पराया है"— ऐसा विचार संकुचित चेतना वाले व्यक्ति करते हैं। उदार हृदय वाले व्यक्तियों के लिए संपूर्ण विश्व एक परिवार है।

– हितोपदेश

संपूर्ण विश्व को अपना बनाना सीखो। पुत्र! कोई भी पराया नहीं है, संपूर्ण विश्व अपना ही है।

– श्री शारदा देवी का अंतिम संदेश
(श्री रामकृष्ण परमहंस की आध्यात्मिक सहधर्मिणी)

महत्त्वपूर्ण प्रश्न ?

1. *किन कारणों से भारत विश्व के विभिन्न भागों के व्यक्तियों का निवास-स्थान बना?*
2. *अन्य देशों से पीड़ित अथवा सताए गए व्यक्ति भारत में क्यों शरण लेते थे?*
3. *भारतीय समाज की ऐसी कौन-सी विशेष प्रकृति है, जो यहाँ आए हुए लोगों के आत्मसातीकरण को संभव बनाती है?*

0784CH05

© NCERT not to be republished

कक्षा 6 की सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तक के अध्याय "विविधता में एकता या 'एक में अनेक'" में हमने पढ़ा कि "अनेक भारतीयों को इस अर्थ में प्रवासी कहा जा सकता है क्योंकि वे अपने जन्म-स्थान या अपने मूल समुदाय में नहीं रहते हैं।" इस अध्याय में हम एक अन्य प्रकार के प्रवासियों का अध्ययन करेंगे— वे लोग जो विश्व के अन्य भागों से भारत आए और स्थायी रूप से यहीं बस गए, जिससे भारत की विविधता में एक नया आयाम जुड़ गया। भारत के इतिहास में प्राचीन से लेकर आधुनिक समयपर्यंत ऐसे अनेक प्रवासी समुदाय रहे हैं। इस अध्याय में उन सभी का समावेश करना संभव नहीं है। अत: यहाँ केवल कुछ चयनित प्रतिनिधि उदाहरणों को ही प्रस्तुत किया गया है।

आइए विचार करें

→ एक ऐसी परिस्थिति की कल्पना कीजिए— बाहर मूसलाधार वर्षा हो रही है। मध्य रात्रि में कोई अपरिचित व्यक्ति आपके द्वार पर आता है। वह आपको बताता है कि वह इसी क्षेत्र में वाहन चला रहा था और अचानक उसका वाहन खराब हो गया। वह रात्रि में आपके यहाँ ठहरने के लिए निवेदन करता हुआ आपसे सहायता माँगता है। तब आपके परिवार के सदस्य रात्रि में किसी अपरिचित को अपने घर में प्रवेश देने के लाभ और हानि पर विचार-विमर्श करने के लिए एकत्रित होते हैं। इस परिस्थिति पर विचार करने हेतु पक्ष और विपक्ष के तर्कों पर चर्चा करने के लिए दो समूह बनाइए।

→ अब इसी परिस्थिति को भारत जैसे देश पर प्रयुक्त करके देखिए— जब कोई शरणार्थी भारत में आश्रय माँगता है, तो क्या वे सभी तर्क प्रयुक्त किए जा सकते हैं?

यहूदी

यहूदी हिब्रूओं से उत्पन्न हुए एक जनसमूह तथा सांस्कृतिक समुदाय के सदस्य हैं। इनकी उत्पत्ति इजरायल क्षेत्र से मानी जाती है और यहूदी धर्म से इनका परंपरागत संबंध है। किसी यहूदी व्यक्ति की पहचान उसकी यहूदी वंश-परंपरा से जन्म के आधार पर होती है अथवा उसके द्वारा किए गए धर्म-परिवर्तन के माध्यम से। इस प्रकार यहूदी पहचान को धर्म, संस्कृति, इतिहास अथवा जातीयता के आधार पर परिभाषित किया जा सकता है।

भारतीय यहूदियों की कथा

यहूदियों ने अनेक अवसरों पर भारत में शरण ली है। विभिन्न देशों में उत्पीड़न के कारण यहूदियों को अपना मूल निवास-स्थान छोड़कर पलायन करना पड़ा। भारत उनके लिए एक ऐसा सुरक्षित स्थान बना, जहाँ वे बिना किसी भय के अपने धर्म का पालन कर सकते थे।

मुंबई के ठीक दक्षिण में कोंकण तट पर यहूदियों का 'बेने इजराइल' नामक एक समुदाय है। इसके विषय में कुछ विद्वानों का मत है कि वे लगभग 175 सा.सं.पू. प्राचीन इजरायल देश से आए थे। उस यात्रा के समय उनका जहाज एक झंझावात

© NCERT not to be republished

(तूफान) में फँस गया और तट के निकट टूट गया। इस दुर्घटना में जो व्यक्ति सुरक्षित बच गए, वे भारत में ही बस गए। यहीं उन्होंने अपने नए जीवन का आरंभ किया। यद्यपि उन्होंने अपने पवित्र ग्रंथों को इस दुर्घटना में खो दिया था, किंतु उन्हें अपनी प्रार्थनाएँ स्मरण थीं, जिनके अनुसार ईश्वर एक है। समय के साथ 'बेने इजरायल' भारत का सबसे बड़ा यहूदी समुदाय बन गया। भारत की स्वतंत्रता के कुछ समय पश्चात उनकी संख्या लगभग 25,000 हो चुकी थी।

कई अन्य यहूदी समूह अपने-अपने देशों में उत्पीड़न के कारण बाद में 12वीं और 19वीं शताब्दी के मध्य भारत आ गए। उनमें से कुछ समूह वर्तमान कोच्चि (कोचीन) के समीप बस गए। कोच्चि के राजा ने यह कहते हुए "जब तक सूर्य और चंद्रमा रहेंगे, तब तक यह भूमि आपकी है" उन्हें निःशुल्क भूमि प्रदान कर आश्रय दिया। यहूदी भारतीय समाज का ही एक अंग बन गए। साथ ही यहूदियों ने अपने उपासना-स्थल 'सिनेगॉग' का निर्माण किया। इसमें वे अपने धर्म व धार्मिक परंपराओं का पालन करते थे।

सिनेगॉग
यहूदियों का उपासना-स्थल, जहाँ धार्मिक अनुष्ठान तथा विवाह जैसे विशेष संस्कार संपन्न किए जाते हैं।

स्वामी विवेकानंद ने 1893 में शिकागो में आयोजित विश्व धर्म संसद में अपने उद्बोधन में अविस्मरणीय विचार प्रकट किए—

"मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे देश से संबंध रखता हूँ, जिसने इस धरती के सभी देशों और सभी धर्मों के उत्पीड़ितों और शरणार्थियों को शरण दी है। मुझे यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि हमने अपने हृदय में उन इजरायलियों की पवित्र स्मृतियाँ सँजोकर रखी हैं, जिनके पवित्र धर्मस्थल को रोमन आक्रांताओं ने तोड़-तोड़कर खंडहर बना दिया था और तब उसी वर्ष उन्होंने दक्षिण भारत में आकर शरण ली थी। मुझे इस बात का गर्व है कि मैं एक ऐसे धर्म से हूँ, जिसने महान पारसी धर्म के लोगों को भी शरण दी और अभी भी उनका पालन-पोषण कर रहा है।"

चित्र 5.1 — स्वामी विवेकानंद

© NCERT not to be republished

आइए पता लगाएँ

नीचे दिए गए दोनों चित्रों को देखिए। क्या दोनों चित्रों में दर्शाए गए स्थान एक ही हैं? यह समझने का प्रयत्न कीजिए कि त्रावणकोर (उस समय कोच्चि के आस-पास का राज्य) के महाराजा यहूदी सिनेगॉग में यहूदियों की पवित्र पुस्तक *तोराह* के लिए इतना बहुमूल्य उपहार क्यों दे रहे हैं?

चित्र 5.2 — कोच्चि के सिनेगॉग में लगी एक पट्टिका

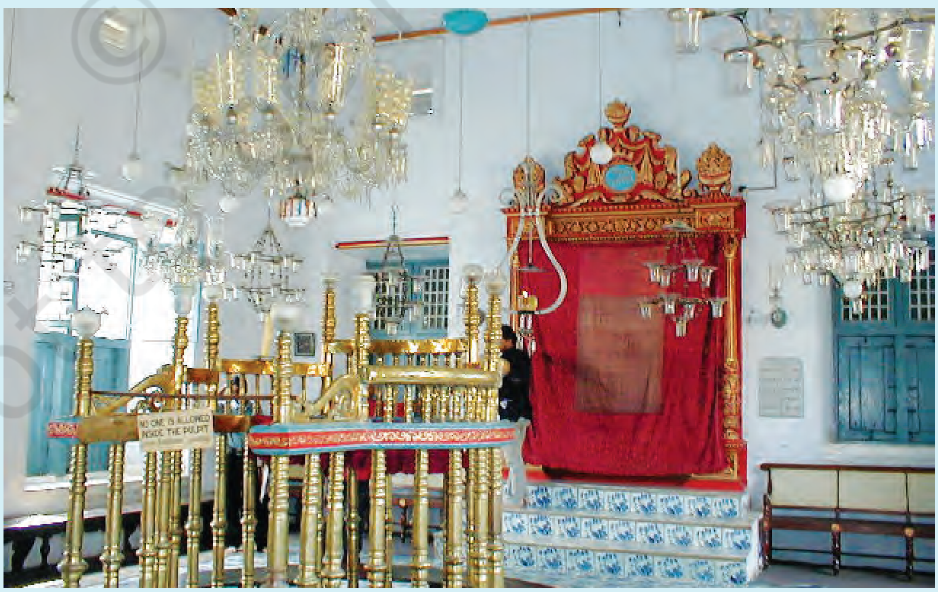

चित्र 5.3 — कोच्चि के सिनेगॉग का आंतरिक दृश्य

आइए पता लगाएँ

चित्र 5.4. को ध्यान से देखिए। समय के साथ भारतीय समाज में यहूदी समुदाय के एकीकरण के विषय में आपको इस चित्र से कौन-कौन से संकेत प्राप्त हो रहे हैं?

चित्र 5.4 — 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मुंबई में एक यहूदी परिवार

सीरियाई ईसाई समुदाय

चौथी शताब्दी सा.सं. के कालखंड में कुछ ईसाई समूह, जो अपनी पूजा-पद्धति और परंपराओं में प्राचीन सीरियाई भाषा का उपयोग करते थे, उन्हें पश्चिम एशिया में कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। रोमन साम्राज्य के अंतर्गत उन्हें कभी-कभी विधर्मी माना जाता था क्योंकि ईसा मसीह के विषय में इस समुदाय की कुछ मान्यताएँ आधिकारिक चर्च से भिन्न थीं। फारसी साम्राज्य में उन पर फारस के शत्रु रोमनों की गुप्त रूप से सहायता करने का संदेह किया गया। परिणामस्वरूप उन्हें प्रताड़ित किया गया। इस उत्पीड़न से बचने के लिए कुछ सीरियाई ईसाई व्यापार मार्गों के माध्यम से पूर्व की ओर यात्रा करते हुए भारत के मालाबार तट (वर्तमान केरलम) पहुँचे, जहाँ वे स्वतंत्रतापूर्वक रह सकते थे और अपनी मान्यताओं के अनुसार उपासना कर सकते थे। भारत में इन्हें 'सीरियाई ईसाई' भी कहा जाता है और ये अनेक संप्रदायों में विभक्त हैं।

विधर्मी
विशेषतः धर्म के संदर्भ में। विधर्मी ऐसे व्यक्ति को कहा जाता है, जो प्रचलित मानदंडों से भिन्न प्रकार की मान्यता रखता है।

उत्पीड़न
ऐसी शत्रुता जो सामान्यतः धार्मिक, जातीय, सामाजिक या राजनैतिक उद्देश्यों के कारण की जाती है, जिसके परिणामस्वरूप प्राय: हिंसा और क्षति होती है।

© NCERT not to be republished

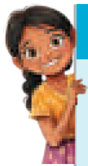

आइए पता लगाएँ

नीचे दिए गए चित्रों का अवलोकन कीजिए। आपको सीरियाई ईसाई समुदाय के भारतीय समाज के साथ आत्मसातीकरण के विषय में इससे क्या ज्ञात होता है?

चित्र 5.5 — एक सीरियाई ईसाई विवाह संस्कार

एक बुद्धिमान पारसी व्यक्ति, दूध और चीनी की कहानी

7वीं शताब्दी सा.सं. में फारस (वर्तमान ईरान) में इस्लाम विजय के पश्चात धार्मिक उत्पीड़न से बचने के लिए पारसी लोग (जरथुस्त्रवाद के अनुयायी) भारत आए। इससे पूर्व, तीसरी से सातवीं शताब्दी के मध्य शक्तिशाली ससानिद साम्राज्य में जरथुस्त्रवाद राजधर्म था। 7वीं शताब्दी के मध्य में अरब मुस्लिम सेनाओं द्वारा पराजित होने के पश्चात जरथुस्त्रवाद के अनुयायियों को अनेक प्रकार के धार्मिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। इनमें इस्लाम में बलपूर्वक धर्मांतरण, धार्मिक कर (जजिया) का आरोपण, पवित्र अग्नि-मंदिरों का विनाश तथा सामाजिक और कानूनी रूप से उपेक्षित किया जाना सम्मिलित था। इन परिस्थितियों के कारण पारसी लोगों को अपना देश फारस छोड़ने के लिए विवश होना पड़ा। अपने धर्म का स्वतंत्र रूप से पालन न कर पाने के कारण अनेक समूहों ने अपनी मातृभूमि त्यागने और अरब सागर पार करने का साहसिक निर्णय लिया। अंततः 8वीं से 10वीं शताब्दी के मध्य उनके अनेक समूह भारत के पश्चिमी तट (वर्तमान गुजरात) पर पहुँचे।

जरथुस्त्रवाद
जरथुस्त्रवाद विश्व के सबसे प्राचीन धर्मों में से एक है। इसकी स्थापना पैगंबर जरथुस्त्र ने मध्य एशिया में की थी। यह एक ईश्वर— अहुरमज्दा— की उपासना पर आधारित है। 'बुराई पर अच्छाई की विजय' इस धर्म का एक प्रमुख तत्त्व है।

© NCERT not to be republished

पारसी अपने साथ बहुत कम वस्तुएँ लेकर आए थे— जैसे उनकी पवित्र अग्नि और यह आशा कि जिस स्थान (भारत) को वह सुरक्षित मानते थे, उस पर अपना निवास बना सकेंगे। तटीय गुजरात के 'संजान' के राजा 'जदी राणा' थे। एक किंवदंती के अनुसार पारसियों ने राजा से निवास हेतु सुरक्षित स्थान प्रदान करने का निवेदन किया। चूँकि वे एक-दूसरे की भाषाओं से परिचित नहीं थे, अत: राजा ने उन्हें दूध से भरा एक पात्र दिखाया। इससे यह संकेत मिला कि उनका राज्य पूर्ण है और उसमें और लोगों को समाहित करने की क्षमता नहीं है। तब पारसियों में से एक बुद्धिमान व्यक्ति ने एक चम्मच चीनी लेकर उसे दूध में इस प्रकार घोल दिया कि दूध बाहर नहीं छलका। यह देखकर जदी राणा प्रसन्न हुए और उन्होंने पारसी समुदाय को अपने राज्य में बसने के लिए एक सुरक्षित स्थान प्रदान किया।

चित्र 5.6 — उदवाड़ा (दक्षिण गुजरात) में स्थित 18वीं शताब्दी का एक पारसी अग्नि-मंदिर। यह मंदिर उस स्थान के समीप है जहाँ पारसी सर्वप्रथम भारत पहुँचे थे।

आइए विचार करें

आपके अनुसार बिना छलकाए दूध में चीनी को घोलने का क्या अर्थ था?

पारसियों की प्राचीन पवित्र अग्नि आज भी उदवाड़ा के मंदिर में निरंतर प्रज्ज्वलित है। यह मंदिर उस स्थान से थोड़ी दूरी पर स्थित है, जहाँ पारसी समुदाय के लोग प्रथम बार भारत पहुँचे थे। उन्होंने अपनी प्राचीन परंपराओं को स्थानीय संस्कृति की परंपराओं के साथ समन्वित किया। आज विश्व में जरथुस्त्रवाद के अनुयायी सर्वाधिक संख्या में भारत में निवास करते हैं। पारसी समुदाय आज भी भारत में रह रहा है तथा समाज के विविध पक्षों को समृद्ध कर रहा है।

© NCERT not to be republished

आइए पता लगाएँ

इस चित्र में पारसी वधू अपने विवाह के लिए तैयार हो रही है। यह चित्र भारतीय संस्कृति के अनेक पक्षों को प्रदर्शित कर रहा है। क्या इनमें से कोई पक्ष आपको भी परिचित-सा प्रतीत होता है? क्या इस चित्र के आधार पर आप भारत में पारसी संस्कृति के एकीकरण के विषय में कोई निष्कर्ष निकाल सकते हैं?

चित्र 5.7 — राजा रवि वर्मा द्वारा निर्मित चित्र वधू का अलंकरण

जरथुस्त्रवाद के दर्शन और भारत की प्राचीन वैदिक विचार-परंपरा के मध्य गहरे संबंध हैं। उदाहरण के लिए, दोनों ही ब्रह्मांड को एक सूत्र में बाँधने वाली ब्रह्मांडीय व्यवस्था की समान अवधारणा में विश्वास करते हैं। उनके अनुष्ठानों में भी समानताएँ दृष्टिगत होती हैं क्योंकि दोनों परंपराओं में अग्नि-उपासना को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है।

कुछ रोचक भेद भी दृष्टिगोचर होते हैं। वेदों में देव जन-कल्याणकारी देवता माने जाते हैं, जबकि पारसियों के प्राचीन पवित्र ग्रंथ *अवेस्ता* में दैव (दैवस्) को अराजकता की ओर ले जाने वाला दुष्ट देवता माना गया है। अवेस्ता का प्रधान देव 'अहुरा' है; किंतु भारत में (वैदिक काल के पश्चात) असुरों को नकारात्मक शक्तियों अथवा राक्षसों के रूप में देखा गया है।

जैसा कि आप देख सकते हैं, दोनों भाषाओं के मध्य भी समानताएँ हैं। वास्तव में प्राचीन अवेस्ता और वैदिक संस्कृत में अनेक शब्द-मूल तथा व्याकरणिक विशेषताएँ समान हैं। इसे समझने के लिए नीचे कुछ उदाहरण दिए गए हैं (बाईं ओर वैदिक शब्द तथा दाईं ओर अवेस्ता भाषा के शब्द)—

- सोम (एक दिव्य पेय) = होम
- होतृ (पुरोहित) = होतार
- यज्ञ (बलिदान) = यास्ना।

ऐसे कई उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि प्राचीन ईरान और प्राचीन भारत के मध्य गहन आध्यात्मिक तथा भाषिक संबंध रहे हैं।

© NCERT not to be republished

अरब व्यापारी समुदाय

चित्र 5.8 — चेरामन जुमा मस्जिद, केरलम

7वीं शताब्दी से अरब व्यापारी भारत आने लगे थे। उनमें से अनेक केरलम, गुजरात और कर्नाटक जैसे पश्चिमी तटीय क्षेत्रों में बस गए। वे मसालों तथा अन्य वस्तुओं का व्यापार करते थे, उन्होंने स्थानीय स्त्रियों से विवाह किया और इस प्रकार नए समुदायों का निर्माण किया। केरलम में वे माप्पिला मुस्लिम समुदाय का अंग बने और भारत की सबसे प्राचीन मस्जिद— चेरामन जुमा मस्जिद के निर्माण में उन्होंने योगदान दिया। भारत में ये प्रारंभिक अरब निवासी विजेता के रूप में नहीं, अपितु शांतिपूर्ण व्यापारियों के रूप में आए थे। वे नए विचार, संस्कृति और धर्म लेकर आए तथा भारत के व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के इतिहास में उन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अफ्रीकी संबंध

सिद्दियों के साथ हमारी भिन्न प्रकार की कथा है। सिद्दी अफ्रीकी मूल के लोग हैं। अफ्रीका में उन्हें दास बनाया गया तथा 7वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य अरब, पुर्तगाली और ब्रिटिश व्यापारियों द्वारा उन्हें दासों के रूप में भारत लाया गया। 18वीं शताब्दी में कुछ सिद्दी व्यक्तियों ने मुस्लिम शासकों की सेनाओं में प्रमुख पद प्राप्त किए

चित्र 5.9 — कर्नाटक की एक सिद्दी बालिका

चित्र 5.10 — कर्नाटक की एक सिद्दी महिला

© NCERT not to be republished

और बंगाल के कुछ भागों पर उनका नियंत्रण भी रहा। सिद्दियों की सांस्कृतिक पहचान अफ्रीकी और भारतीय परंपराओं के सम्मिश्रण को प्रदर्शित करती है। उनकी विशिष्ट नृत्य-परंपरा में अफ्रीकी-शैली के ढोल-वादन का प्रमुख स्थान है। समय के साथ उन्होंने अपनी भाषा को क्षेत्रीय प्रभावों के अनुरूप परिवर्तित किया और अफ्रीकी धार्मिक परंपराओं को— हिंदू, इस्लाम अथवा ईसाई धर्म के साथ समन्वित किया। सिद्दियों को अनुसूचित जनजाति के रूप में मान्यता प्राप्त है। हालाँकि, उनकी समग्र आर्थिक स्थिति अब भी दुर्बल बनी हुई है और उन्हें शिक्षा तथा आजीविका के उत्तम अवसर उपलब्ध कराने के प्रयत्न किए जा रहे हैं।

आइए पता लगाएँ

यहाँ दिए गए चित्रों से आपको अफ्रीकी और भारतीय संस्कृतियों के एकीकरण के कौन-से संकेत प्राप्त होते हैं? कुछ ऐसी विशेषताओं की पहचान कीजिए और उनके नाम बताइए जो स्पष्ट रूप से भारतीय हैं।

चित्र 5.11 — सिद्दी नर्तक

चित्र 5.12 — हीराबाई लोबी

हीराबाई लोबी गुजरात में बसे सिद्दी समुदाय से थीं। उन्होंने अपने समुदाय की महिलाओं के उत्थान हेतु निरंतर परिश्रम किया। उन्होंने महिलाओं को बैंकिंग सेवाओं से जोड़ा तथा उन्हें जैविक कृषि और अन्य आजीविका के विकल्पों के विषय में शिक्षित किया। समुदाय के प्रति उनकी निःस्वार्थ सेवा के लिए उन्हें वर्ष 2023 में पद्म श्री से सम्मानित किया गया।

भारत में आर्मेनियाई लोग

चित्र 5.13 — कोलकाता स्थित आर्मेनियाई गिरजाघर में आर्मेनियाई क्रिसमस का आयोजन

आर्मेनिया अपेक्षाकृत एक छोटा पर्वतीय देश है जो तुर्की और अजरबैजान के मध्य, ईरान के ठीक उत्तर में स्थित है। शताब्दियों पूर्व, आर्मेनियाई व्यापारी भारतीय मसालों और उत्तम कोटि के मलमल का व्यापार करते थे। कुछ ऐतिहासिक प्रमाण इस बात के संकेत देते हैं कि उन्होंने 8वीं शताब्दी में मालाबार तट पर अपनी प्रथम बस्ती स्थापित की थी। 16वीं शताब्दी में मुगलों के शासनकाल के समय (इसका अध्ययन आप 8वीं कक्षा में करेंगे) फारस से आए अनेक आर्मेनियाइयों को मुगल सम्राटों का संरक्षण प्राप्त हुआ और उन्होंने भारत में अपनी बस्तियाँ विकसित करना आरंभ किया।

इस प्रकार की सबसे प्रारंभिक बस्ती आगरा में स्थापित हुई, जहाँ मुगल सम्राट अकबर ने उन्हें गिरजाघर बनाने और अपने ईसाई धार्मिक आचारों का पालन करने की अनुमति प्रदान की। विभिन्न मुगल सम्राटों के काल में आर्मेनियाई लोगों ने मुगल शाही परिवार, सेना तथा प्रशासन में महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाईं। उदाहरणस्वरूप, अकबर के दरबार में अब्दुल हई मुख्य न्यायाधीश थे, जबकि लेडी जूलियाना शाही महल में चिकित्सक के रूप में कार्यरत थीं।

आर्मेनियाई लोग सूरत, कोलकाता और चेन्नई में भी बस गए। वहाँ उन्होंने विद्यालयों, गिरजाघरों और कब्रिस्तानों का निर्माण किया तथा एक स्थायी सांस्कृतिक प्रभाव छोड़ा। कोलकाता आर्मेनियाइयों का एक प्रमुख केंद्र बन गया। 18वीं शताब्दी में स्थापित आर्मेनियन कॉलेज और मदर मैरी गिरजाघर आज भी सक्रिय हैं। उनकी यह कथा भारत की उस परंपरा को प्रतिबिंबित करती है, जिसमें आश्रय और समृद्धि की खोज में आए विविध समुदायों को अपनाया गया।

मद्रास (वर्तमान चेन्नई) के समृद्ध व्यापारिक मार्गों ने आर्मेनियाई व्यापारियों को आकर्षित किया। 17वीं शताब्दी के मध्य में ये व्यापारी वहाँ स्थायी रूप से बस गए। वे व्यापारी विशेष रूप से रेशम, मसालों और बहुमूल्य रत्नों के व्यापार में प्रभावशाली बने

© NCERT not to be republished

और नगर के आर्थिक तथा सांस्कृतिक इतिहास पर स्थायी प्रभाव छोड़ गए। जॉर्ज टाउन की आर्मेनियन स्ट्रीट उनकी उपस्थिति की स्मृति को सँजोए हुए है, जबकि 18वीं शताब्दी के मध्य निर्मित सेंट मैरी आर्मेनियन गिरजाघर उनकी धार्मिक आस्था का प्रतीक है। यद्यपि समय के साथ आर्मेनियाई जनसंख्या में कमी आई है, फिर भी कुछ परिवार और धरोहर-संरक्षण से जुड़े हुए समूह वर्तमान में भी चेन्नई में अपनी स्थापत्य, वाणिज्यिक और आध्यात्मिक धरोहर को संरक्षित किए हुए हैं।

भारत में बहाई समुदाय

19वीं शताब्दी के मध्य में फारस (वर्तमान ईरान) में बहाई नामक एक नए धर्म का आरंभ हुआ। इसके प्रवर्तक बहाउल्लाह थे। उनकी शिक्षाओं में समस्त मानवता की एकता और विभिन्न धर्मों के मध्य सामंजस्य पर विशेष बल दिया गया। तथापि ईरान के तत्कालीन सत्ताधारी धार्मिक शासक वर्ग ने भिन्न आस्थाओं के कारण उन्हें विधर्मी घोषित किया और उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया। परिणामस्वरूप कुछ बहाइयों ने सुरक्षित स्थान की खोज आरंभ की और अन्य देशों की ओर पलायन किया। जिन प्रारंभिक स्थानों पर वे पहुँचे, उनमें भारत प्रमुख था। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बहाई भारत आने लगे। समय के साथ अनेक भारतीयों ने इस धर्म को अपनाया।

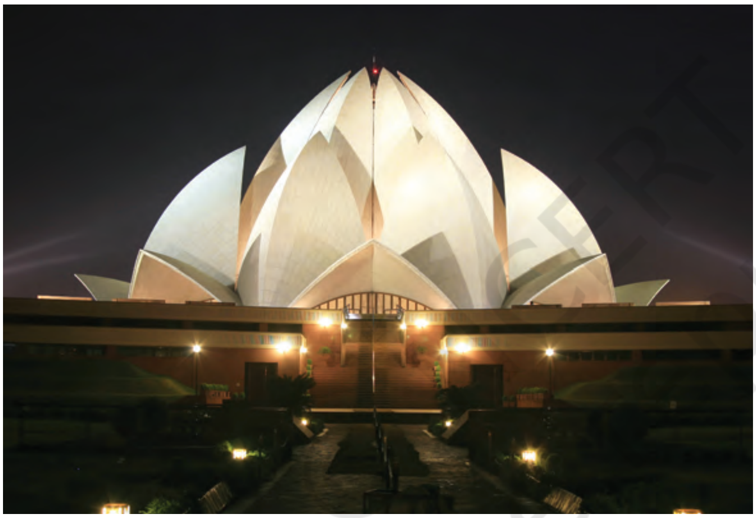

चित्र 5.14 — नई दिल्ली में बहाई लोटस टेंपल

बहाई समुदाय सभी धर्मों और पृष्ठभूमियों के व्यक्तियों का स्वागत करता है। यद्यपि, ईरानी बहाई उत्पीड़न से बचने के लिए भारत आए थे, परंतु आज यहाँ भारत में रहने वाले अधिकांश बहाई भारतीय ही हैं, जो इस धर्म के एकता और प्रेम के संदेश में विश्वास रखते हैं।

'गुड महाराजा' और पोलिश बच्चे

यदि आप कभी पोलैंड की राजधानी वारसॉ में 'गुड महाराजा स्क्वायर' जाएँ, तो वहाँ स्थित इस स्मारक (चित्र 5.15) को देखकर आपको आश्चर्य हो सकता है।

इसके पीछे एक प्रेरणादायक कहानी है। वर्ष 1939 से 1945 के मध्य हुए द्वितीय विश्व युद्ध के समय पोलैंड पर आक्रमण हुआ। इस युद्ध में सहस्रों परिवार बिखर गए

not to be republished

और अनेक बच्चे अनाथ हो गए। नवानगर रियासत (वर्तमान जामनगर) के महाराजा दिग्विजयसिंहजी रणजीतसिंहजी जडेजा इस त्रासदी से अत्यंत द्रवित हुए। उन्होंने रेड क्रॉस और अन्य संगठनों को सक्रिय कर बच्चों को बचाने और उन्हें जामनगर लाने की व्यवस्था की। उन्होंने उन्हें सुरक्षित आवास, भोजन और संरक्षण प्रदान किया। वर्ष 1942 से 1946 के मध्य लगभग एक हजार पोलिश अनाथ बच्चों के जीवन की रक्षा का श्रेय उन्हें दिया जाता है। इसके अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों से पलायन कर आए सहस्र पोलिश शरणार्थियों को भी उनके राज्य में सुरक्षित निवास प्रदान किया गया। युद्ध की समाप्ति के पश्चात बच्चे और अन्य शरणार्थी सुरक्षित रूप से अपने देश लौट गए।

चित्र 5.15 — द्वितीय विश्व युद्ध के समय पोलिश शरणार्थियों की सहायता के लिए दिग्विजयसिंहजी रणजीतसिंहजी के सम्मान में वारसॉ में निर्मित स्मारक

21वीं शताब्दी के प्रारंभ में पोलैंड के राष्ट्रपति द्वारा पोलिश जनता के प्रति महाराजा की सेवा को औपचारिक रूप से सम्मानित किया गया और उनके सम्मान में यह स्मारक निर्मित किया गया। इस प्रकार उन अनाथ बच्चों के लिए कुछ समय के लिए ही सही, भारत एक स्नेहपूर्ण दूसरा घर बन गया।

भारत में तिब्बती शरणार्थी

हिमालय पर्वतमाला के उस पार स्थित तिब्बत भारत का उत्तरी पड़ोसी है। 7वीं शताब्दी में 'हिमभूमि' कहा जाने वाला तिब्बत तब बौद्ध धर्म का एक प्रमुख केंद्र बना, जब वहाँ के राजा ने बुद्ध की शिक्षाओं को स्वीकार किया। कुछ अवरोधों के उपरांत भी धीरे-धीरे तिब्बत में बौद्ध धर्म का विस्तार हुआ।

12वीं और 13वीं शताब्दी के समय पूर्वी भारत में तुर्क-अफगान सैन्य आक्रमणों के परिणामस्वरूप नालंदा तथा अन्य बौद्ध शिक्षा-केंद्र नष्ट कर दिए गए (इस पाठ्यपुस्तक में 'संघर्ष एवं परिवर्तन का काल : 11वीं और 12वीं शताब्दी' देखें)। इससे अनेक भिक्षु तिब्बत चले गए और प्रायः अपने साथ संस्कृत ग्रंथों की बहुमूल्य पांडुलिपियाँ भी ले गए। 15वीं शताब्दी से वहाँ दलाई लामा परंपरा का महत्त्व बढ़ गया।

© NCERT not to be republished

प्रत्येक दलाई लामा को अपने पूर्ववर्ती का पुनर्जन्म माना जाने लगा और कालांतर में उनका प्रभाव बढ़ता गया। अंततः वे आध्यात्मिक प्रमुख बने और 17वीं शताब्दी के मध्य से तिब्बत के शासक भी माने जाने लगे।

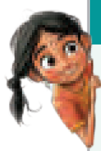

इसे अनदेखा न करें

1959 में भारत में शरण लेने के शीघ्र पश्चात तिब्बतियों ने अपनी पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली 'सोवा रिग्पा' का प्रचार-प्रसार आरंभ किया। इसे 'उपचार-कला' भी कहा जाता है। 8वीं शताब्दी में तिब्बत में ल्हासा के समीप आयोजित एक चिकित्सीय परिषद द्वारा इस चिकित्सा-प्रणाली पद्धति को संहिताबद्ध किया गया था। यह पद्धति आयुर्वेद के प्राचीन सिद्धांतों और उपचार-पद्धतियों का चीन, मध्य एशिया, फारस तथा यहाँ तक कि यूनान की प्राचीन चिकित्सा प्रणालियों से प्राप्त ज्ञान से समन्वय प्रस्तुत करती है।

वर्तमान में तिब्बती चिकित्सा पद्धति नेपाल और भूटान सहित हिमालयी क्षेत्रों में लोकप्रिय बनी हुई है। भारत के हिमाचल प्रदेश में धर्मशाला स्थित मेन-त्सी-खांग जैसे संस्थान इस प्रणाली के माध्यम से दीर्घकालिक रोगों का उपचार तथा महामारियों का नियंत्रण करते हैं। इसे भारत सरकार के आयुष कार्यक्रम में भी सम्मिलित किया गया है। आयुष कार्यक्रम आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध, सोवा रिग्पा तथा होम्योपैथी सहित पारंपरिक और स्वदेशी चिकित्सा प्रणालियों का संवर्धन करता है।

चित्र 5.16 — गोवा का एक तिब्बती बाजार

1950 के पश्चात चीन ने कई चरणों में तिब्बत पर नियंत्रण स्थापित कर लिया और अंततः उसको अपने अधीन कर लिया। 1959 में तिब्बत में चीनियों के विरुद्ध ल्हासा (तत्कालीन तिब्बत की धार्मिक और प्रशासनिक राजधानी) में हुए जनविद्रोह के पश्चात 14वें दलाई लामा को हिमालय पार कर भारत में शरण लेने की सलाह दी गई, जहाँ भारत सरकार ने उन्हें आश्रय प्रदान किया। तब से वे भारत में एक 'सम्मानित अतिथि' के रूप में रह

चित्र 5.17 — कर्नाटक के बायलाकुप्पे में स्थित तिब्बती मठ

रहे हैं और हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में निवास करते हैं। धर्मशाला से केंद्रीय तिब्बती प्रशासन एक निर्वासित सरकार के रूप में कार्य करता है। दलाई लामा अपनी 'चार प्रतिबद्धताओं' के लिए प्रसिद्ध हैं— करुणा, क्षमा और सहिष्णुता जैसे मानवीय मूल्यों का संवर्धन; धर्म का प्रसार; तिब्बती संस्कृति का संरक्षण; तथा भारत की सभ्यतागत धरोहर का पुनर्जीवन, सामंजस्य, सद्भाव और विशेष रूप से करुणा और अहिंसा जैसे भारतीय मूल्यों का प्रचार-प्रसार।

भारत सरकार ने तिब्बती शरणार्थियों के पुनर्वास की व्यवस्था की, उनके बच्चों को शिक्षा प्रदान की तथा तिब्बती बस्तियों की स्थापना में सहयोग दिया, जिससे यह समुदाय भारत को अपना दूसरा निवास-स्थान बना सके और अपनी भाषा, संस्कृति तथा धरोहर का संरक्षण एवं संवर्धन कर सके। भारत में विशेषकर कर्नाटक में तिब्बत के मूल मठों के अनुरूप अनेक तिब्बती मठों की स्थापना से तिब्बती बौद्धों को अपनी जीवन-पद्धति और आध्यात्मिक साधनाओं का निर्बाध पालन करने का अवसर प्राप्त हुआ। अनेक अशासकीय संगठनों ने भी आजीविका के साधन उपलब्ध कराकर इस समुदाय का सहयोग किया है। समय के साथ भारत में तिब्बती शरणार्थी समाज का अभिन्न अंग बन गए हैं।

© NCERT not to be republished

“संपूर्ण विश्व एक परिवार है”

ये उदाहरण उन लोगों की कथाएँ प्रस्तुत करते हैं जिन्होंने या तो शरण हेतु या समृद्धि और उत्तम जीवन की संभावनाओं को देखते हुए भारत को अपना निवास-स्थान बनाया। ये कथाएँ भारतीय जीवन-दृष्टि (समाज) में निहित स्वीकार्यता और समावेशन की संस्कृति की झलक प्रस्तुत करती हैं। ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ अर्थात संपूर्ण विश्व एक परिवार है— का विचार केवल एक नारा नहीं अपितु सहस्राब्दियों से चला आ रहा एक आचरण (जीवन-परंपरा) है।

आइए पता लगाएँ

क्या आपके आस-पास ऐसे कोई समुदाय हैं, जिनके पूर्वज शताब्दियों पूर्व भारत आए हों और फिर यहीं बस गए हों? कक्षा में चर्चा कीजिए कि उनके अनुभव कैसे रहे होंगे?

भारत ने एक करुणामय देश के रूप में वह प्रतिष्ठा कैसे अर्जित की जिसमें उसने विश्व के विभिन्न देशों से आए लोगों का स्वागत किया और उन्हें अपना घर बनाने का अवसर दिया? जैसा कि हमने ‘अतीत के चित्रपट’ के आरंभिक अध्यायों में देखा कि भारत में अनेक विचार-परंपराएँ विकसित हुईं। उनकी मूल शिक्षाओं में ‘सर्वे भवन्तु सुखिनः’ अर्थात सभी प्राणी सुखी हों, ‘अतिथि देवो भव’ अर्थात अतिथि देवतुल्य हैं तथा करुणा जैसे मूल्य सम्मिलित हैं। *करणीय मेत्त सुत्त* (करुणामय मैत्री पर बुद्ध के उपदेश) में इसी भावना को बहुत सुंदर शब्दों में व्यक्त किया गया है— “जिस प्रकार माता अपने एकमात्र पुत्र की रक्षा अपने प्राणों से भी अधिक करती है, उसी प्रकार असीम हृदय से समस्त जीवों के प्रति प्रेम और करुणा का भाव रखना चाहिए तथा संपूर्ण संसार में मैत्री का प्रसार करना चाहिए…”

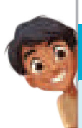

आइए पता लगाएँ

किसी ज्ञात लोक-कथा, लोक-परंपरा अथवा स्थानीय रीति-परंपरा में निहित ऐसे ही मूल्यों की पहचान कीजिए। इसके लिए आप अपने अभिभावकों या परिजनों से भी चर्चा कर सकते हैं। इन कथाओं को संकलित कर कक्षा का एक कथा-संग्रह तैयार कीजिए। आप इसमें चित्रांकन भी सम्मिलित कर सकते हैं।

© NCERT not to be republished

भारत के बाहर भारतीय जीवन-मूल्य

यह देखना भी महत्त्वपूर्ण है कि विदेशों में बसे भारतीय प्रवासी समुदाय ने भी ऐसे मूल्यों को अपने साथ ले जाकर व्यवहारिक रूप से उनका पालन किया है। आज जहाँ-जहाँ भारतीयों की पर्याप्त संख्या निवास करती है, वहाँ उन्हें प्रायः शांतिप्रिय, विधि-पालक, प्रगतिशील और समृद्ध अल्पसंख्यक समुदाय के रूप में देखा जाता है। यह समुदाय संबंधित देश की अर्थव्यवस्था में योगदान देता है और समाज में सहज रूप से समन्वित (एकीकृत) हो जाता है।

यद्यपि विश्व के अनेक भागों में शताब्दियों से धार्मिक उत्पीड़न होता रहा है, भारत ने विभिन्न आस्थाओं और विचार-परंपराओं के साथ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और स्वीकार्यता की संस्कृति विकसित की है। भारतीय समाज और भारतीय संस्कृति का यही अंतर्निहित स्वभाव उत्पीड़ित लोगों के लिए एक सुरक्षित आश्रय-स्थल बना।

ऐसे भी अनेक उदाहरण मिलते हैं, जब लोग भारत को जीतने के उद्देश्य से आए, किंतु स्वयं भारत की विविधतापूर्ण संस्कृति, समृद्ध दर्शन एवं ज्ञान-परंपराओं, विशिष्ट भौगोलिक परिस्थितियों और सुदृढ़ अर्थव्यवस्था से प्रभावित होकर उसके अंग बन गए, जैसा कि हमने (इस पाठ्यपुस्तक के भाग 1 में 'पुनर्गठन का काल' अध्याय में) इंडो-यूनानियों और कुषाणों के उदाहरण देखे हैं; ऐसे अनेक उदाहरण इतिहास में और भी प्राप्त होते हैं।

संपूर्ण मानवता की मौलिक एकता का विचार भारतीय सभ्यता के केंद्रीय मूल्यों में से एक प्रमुख मूल्य है। यह मूल्य वर्तमान विश्व के समक्ष उपस्थित अनेक संकटों— युद्ध, जलवायु परिवर्तन, बढ़ती असमानता और भेदभाव के समाधान में सहायक सिद्ध हो सकता है।

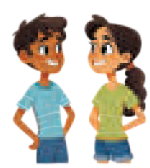

आगे बढ़ने से पहले…

- भारत उन लोगों के लिए एक सुरक्षित आश्रय-स्थल रहा है, जिन्हें अपनी मातृभूमि में उत्पीड़न का सामना करना पड़ा या जो नए अवसरों की खोज में अन्य देशों से यहाँ आए।
- 'वसुधैव कुटुम्बकम्', 'अतिथि देवो भव', 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' जैसे भारतीय सांस्कृतिक मूल्य उस समावेशन और स्वीकृति की भावना का आधार हैं, जिसके कारण छोटे-से-छोटे समुदाय भी भारत में स्वयं को सुरक्षित अनुभव करते हुए शताब्दियों तक अपनी परंपराओं का संरक्षण कर पाए हैं।
- विश्व के समक्ष उपस्थित बहुआयामी संकटों के समय इन मूल्यों की सार्वभौमिक प्रासंगिकता और भी अधिक स्पष्ट हो जाती है।

© NCERT not to be republished

प्रश्न एवं क्रियाकलाप

1. विश्व के मानचित्र की रूपरेखा पर उन संभावित मार्गों का अंकन कीजिए जिनका उपयोग इस अध्याय में उल्लिखित समुदायों ने भारत पहुँचने के लिए किया। यह भी बताइए कि उन्हें किन-किन भौतिक एवं भौगोलिक परिस्थितियों का सामना करना पड़ा होगा?
2. भारतीय संस्कृति के वे कौन-से प्रमुख अंतर्निहित मूल्य हैं जो विभिन्न पृष्ठभूमियों से आने वाले लोगों का स्वागत करने में सहायक रहे हैं?
3. होमी भाभा, सैम मानेकशॉ, रतन टाटा, फली नरीमन, नानी पालकीवाला और कॉर्नेलिया सोराबजी आदि पारसी समुदाय के ऐसे कुछ व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में उत्कृष्ट उपलब्धियाँ प्राप्त कीं। अन्य समुदायों के ऐसे व्यक्तियों के विषय में सूचना एकत्रित कीजिए जिन्होंने भारत को अपना घर बनाया और महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।
4. एक कक्षा-परियोजना बनाइए। कक्षा के विद्यार्थियों को समूहों में विभाजित कीजिए। प्रत्येक समूह इस अध्याय में उल्लिखित किसी एक समुदाय के विषय में और अधिक सूचना एकत्रित कर एक लघु परियोजना तैयार करेगा। एकत्र की गई सूचनाओं को नाटक, पोस्टर, गीत, चित्रांकन आदि के माध्यम से सहपाठियों के साथ साझा कीजिए।

© NCERT not to be republished